देववामपार्श्वे श्रीसीतायै नमः[9]। सीताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। अग्निकोण ॐ शार्ङ्गाय नमः शार्ङ्गश्रीपा० २। दक्षिणपार्श्वे ॐ शराय नमः[1] ३। वामपार्श्वे ॐ चापाय नमः[10] ४।

इससे पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण।।१।।

इसके बाद :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ रां हृदयाय नमः १। निर्ऋते ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। वायव्ये ॐ रूं शिखायै वषट् ३। ऐशान्ये ॐ रैं कवचाय हुं ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। देवपश्चिमे ॐ रः अस्त्राय फट् ६।

इससे षडङ्गो की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण।। २।।

उसके बाहर अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची दिशा की कल्पना करके प्राची क्रम से : ॐ हनुमते नमः[11]। हनुमच्छ्रीपा० १। ॐ सुग्रीवाय नमः[12]। सुग्रीवश्रीपा० २। ॐ भरताय नमः[13]। भरतश्रीपा० ३। ॐ विभीषणाय नमः[14]। विभीषणश्रीपा० ४। ॐ लक्ष्मणाय नमः[15]। लक्ष्मणश्रीपा० ५। ॐ अङ्गदाय नमः[16]। अङ्गदश्रीपा०।। ६।। ॐ शत्रुघ्नाय नमः[17]। शत्रुघ्नश्रीपा० ७। ॐ जाम्बवते नमः[18]। जाम्बवच्छ्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण।। ३।। फिर अष्टदलाग्रों में :

ॐ सृष्टाय नमः[19]। सृष्टश्रीपा० १। ॐ जयन्ताय नमः[20]। जयन्तश्रीपा० २। ॐ विजयाय नमः[21]। विजयश्रीपा० ३। ॐ सुराष्ट्राय नमः[22]। सुराष्ट्रश्रीपा० ४। ॐ राष्ट्रवर्धनाय नमः[23]। ॐ राष्ट्रवर्धनश्रीपा० ५। ॐ अकोपाय नमः[24]। अकोपश्रीपा० ६। ॐ धर्मपालनाय नमः[25]। धर्मपालश्रीपा० ७। ॐ सुमन्ताय नमः[26]। सुमन्तश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण।। ४।।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की और उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इत्यावरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च (शारदातिलके) वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशं सरोरुहैः। जुहुयादर्चिते वह्नौ ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः।। १।। एवं पूजादिभिः सिद्धे मनौ कर्माणि साधयेत्। जातीप्रसूनैर्जुहुयाच्चन्दनाम्भःसमुक्षितैः।। २।। राजवश्याय कमलैर्धनधान्यादिसम्पदे। नीलोत्पलानां होमेन वशयेदखिलं जगत्।। ३।। बिल्वप्रसूनैर्जुहुयादिन्दिरावाप्तये नरः। दूर्वाहोमेन दीर्घायुर्भवेन्मन्त्री निरामयः ।। ४।। रक्तोत्पलहुतान्मन्त्री धनमाप्नोति वांछितम्। मेधाकामेन होतव्यं पालाशकुसुमैर्नवैः।। ५।। तज्जप्तमम्भः प्रपिबेत्कविर्भवति वत्सरात्। तन्मन्त्रितान्नं भुञ्जीत महदारोग्यमाप्नुयात्।। ६।।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके जप करे।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसका पुरश्चरण ६ लाख जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। शारदातिलक में कहा गया है कि मन्त्र में जितने वर्ण हैं उतने लाख मन्त्र का जप करना चाहिये। फिर अर्चित अग्नि में उसका दशांश कमलों से होम करे। तदुपरान्त ब्राह्मण भोजनादि कराना चाहिये। इस प्रकार पूजा आदि करने से सिद्ध हुये मन्त्र से प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिये। राजा को वश में करने के लिय चन्दन के जल से सिक्त चमेली के फूलों से होम करना चाहिये। धन–धान्यादि की प्राप्ति के लिये कमलों से होम करना चाहिये। नीले कमलों से होम करने से साधक सारे संसार को वश में कर लेता है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये बेल के फूलों से होम करना चाहिये। दूर्वा से होम करने से साधक रोगरहित होकर दीर्घायु प्राप्त करता है। लाल कमल के होम से मनुष्य वाञ्छित धन प्राप्त करता है। मेधा प्राप्ति की इच्छा से पलाश के नये फूलों से होम करना चाहिये। मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित जल पीने से एक वर्ष में कवि हो जाता है और उससे अभिमन्त्रित भोजन करने से महान आरोग्य प्राप्त करता है।

अयं मन्त्रः षड्विधः। तथा च-स्वकामशक्तिवाग्लक्ष्मीतारादयः पञ्चवर्णकः। षडक्षरः षड्विधः स्याच्चतुर्वर्गफलप्रदः।। १।। ब्रह्मा सम्मोहनः शक्तिर्दक्षिणामूर्तिरव्ययः। अगस्तिः श्रीशिवः प्रोक्तो मुनयोत्र क्रमादिमे।। २।। अथवा कामबीजादेर्विश्वामित्रो मुनिर्मनोः। छन्दो गायत्रसंज्ञं च श्रीरामश्चैव देवता।। ३।। ध्यानपूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कार्यम्। इति षड्विधमन्त्रस्वरूपम्।

यह मन्त्र छः प्रकार से बनता है। कहा भी गया है कि आरम्भ में स्व (रां), काम (क्लीं), शक्ति (ह्रीं), वाक् (ऐं), लक्ष्मी (श्रीं) तथा तार (ॐ) इन बीजों को पञ्चवर्ण (रामाय नमः) के आदि में लगाने से यह षड्विध षडक्षर मन्त्र बनता है जो चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को देने वाला है। मन्त्रों के क्रमशः ब्रह्मा, सम्मोहन, शक्ति, दक्षिणामूर्ति अव्यय, अगस्ति, और श्रीशिव ऋषि कहे गये हैं। अथवा कामबीजयुक्त मन्त्र के ऋषि विश्वामित्र भी कहे गये हैं। इन मन्त्रों का छन्द गायत्री और श्रीराम देवता हैं। ध्यान, पूजादि सब पूर्ववत् करना चाहिये। इति षड्विध मन्त्रस्वरूप। देखिये नीचे षडविध मन्त्र–स्वरूप चक्र।

षड्विधमन्त्रस्वरूपम्	ऋषिः	छन्दः	देवता
१ रां रामाय नमः	ब्रह्मा	गायत्री	श्रीरामः
२ क्लीं रामाय नमः	सम्मोहन-विश्वामित्रः	गायत्री	श्रीरामः
३ ह्रीं रामाय नमः	शक्तिः	गायत्री	श्रीरामः
४ ऐं रामाय नमः	दक्षिणामूर्तिः	गायत्री	श्रीरामः
५ श्रीं रामाय नमः	अगस्तिः	गायत्री	श्रीरामः
६ ॐ रामाय नमः	शिवः	गायत्री	श्रीरामः

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दशाक्षररामन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'हुं जानकीवल्लभाय स्वाहा' इति दशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान :

विनियोगः **अस्य मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः। विराट् छन्दः। सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामो देवता। हुं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास : ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामदेवतायै नमः हृदि ३। हुं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ क्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास भी करे।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ हुं नमः शिरसि १। ॐ जां नमः ललाटे २। ॐ नं नमः भ्रूमध्ये ३। ॐ कीं नमः तालुनि ४। ॐ वं नमः कण्ठे ५। ॐ ल्लं नमः हृदि ६। ॐ भां नमः बाह्वोः ७। ॐ यं नमः नाभौ ८। ॐ स्वां नमः जान्वोः ९। ॐ हां नमः पादयोः १०। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् :

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नसौन्दर्यमण्डपे। मन्दारपुष्पैरवद्धवितान-तोरणाङ्किते।। १।। सिंहासनसमारूढं पुष्पकोपरि राघवम्। रक्षोभिर्हरिभिर्देवैर्दिव्य-यानगतैः शुभैः।। २।। संस्तूयमानं मुनिभिः सर्वतः परिसेवितम्। सीतालंकृतवामाङ्गं लक्ष्मणेनोपशोभितम्।। ३।। श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरणभूषितम्।

एवं ध्यात्वा मन्त्रं जपेत्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। इति दशाक्षर राममन्त्रप्रयोगः।

इससे ध्यान करके मन्त्र का जप करे। इसका पुरश्चरण १० लाख जप है। अन्य सब कुछ पूर्ववत् है। इति दशाक्षर राममन्त्रप्रयोग।

राममन्त्रषट्स्वरूपम्।

वह्निर्नारायणाढयो यो जठरः केवलस्तथा। द्व्यक्षरो मन्त्रराजोयं सर्वाभीष्ट-फलप्रदः।। १।। श्री मायामन्मथैकैकबीजाद्यन्तगतो मनुः। चतुर्वर्णः स एव स्यात् षड्वर्णो वाञ्छित प्रदः।। २।। स्वाहान्तो हुंफडन्तो वा नमोऽन्तो वा भवेन्मनुः। तारो मायारमानंगवाक्स्वबीजैस्तु षड्विधः ।। ३।। त्र्यक्षरो मन्त्रराजः स्यात्सर्वाभीष्टफलप्रदः। द्व्यक्षरश्चन्द्रभद्रान्तो मन्त्रोयं चतुरक्षरः।। ४।। रामाय द्वन्मनुः प्रोक्तो मन्त्रः पञ्चाक्षरोऽपरः। पञ्चाशन्मातृकावर्णप्रत्येकपूर्वको मनुः।। ५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लक्ष्मीवाग्मन्मथादिश्च तारादि स्यादनेकधा। वह्निस्थं शयनं विष्णोरूर्ध्वचन्द्र-विभूषितम्।। ६।। एकाक्षरो मनुः प्रोक्तो मन्त्रराजः सुरद्रुमः। ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्री छन्दो रामस्तु देवता।। ७।। एकाक्षरेतु द्वादशलक्ष जपः अन्येषां षड्लक्षजपः इति राममन्त्रप्रयोगः।

राममन्त्र का षट् स्वरूप : 'राम' यह द्व्यक्षर मन्त्रराज समस्त अभीष्ट फलों का दाता है। राम का षडक्षर मन्त्र छः प्रकार का होता है : १. रां रामाय नमः। २. ह्रीं रामाय नमः। ३. क्लीं रामाय नमः। ४. ऐं रामाय नमः। ५. श्रीं रामाय नमः। ६. ॐ रामय नमः। उक्त द्व्यक्षर राममन्त्र के आदि और अन्त में एक–एक बीजमन्त्र जोड़ देने पर चार अक्षरवाले मन्त्र बन जाते हैं। यथा, श्रीं राम श्रीं। ह्रीं राम ह्रीं। क्लीं राम क्लीं। किन्तु छः वर्णोंवाले मन्त्र अभीष्ट फल देनेवाले हैं। चतुरक्षर मन्त्र को अन्त में स्वाहा, हुम्, फट्, या नमः लगाने से षडक्षर मन्त्र बनता है। यथा, श्रीं राम श्रीं स्वाहा। श्री राम श्री हुं फट्, श्रीं राम श्रीं नमः। उक्त द्व्यक्षर मन्त्र के आदि में ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐं या रां बीजों में से किसी को अलग–अलग लगाने से छः प्रकार के त्र्यक्षर मन्त्र बनते हैं। यथा ॐ राम, ह्रीं राम, श्रीं राम, क्लीं राम, ऐं राम, रां राम– ये त्र्यक्षर मन्त्रराज साधक के सभी अभीष्ट फलों को प्रदान करते हैं। राम के आगे द्व्यक्षर 'चन्द्र' या 'भद्र' शब्द लगाने से रामचन्द्र, रामभद्र ये चार अक्षरवाले दो मन्त्र बनते हैं। 'रामाय नमः' एक दूसरा पञ्चाक्षर मन्त्र बनता है। श्रीं रामाय नमः, ऐं रामाय नमः, क्लीं रामाय नमः, ॐ रामय नमः–ये चार प्रकार के षडक्षर मन्त्र हैं। अं रामाय नमः। आं रामाय नमः इत्यादि प्रकार से मातृका वर्णों से एक–एक वर्ण नाम के आगे लगाने से श्रीराम को पचास प्रकार के मन्त्र बनते हैं। इन सभी मन्त्रों का ध्यान, पूजा आदि पूर्ववत् षडक्षर मन्त्र के समान ही जानना चाहिये। 'रां' यह एकाक्षर मन्त्र सब मन्त्रों में प्रधान और कल्पवृक्ष के समान है। इस एकाक्षर मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा हैं, छन्द गायत्री है और देवता राम हैं। एकाक्षर मन्त्र के पुरश्चरण में बारह लाख तथा अन्य मन्त्रों के पुरश्चरण में छः लाख जप करना चाहिये। इति राममन्त्र प्रयोग।

अथ रामनामलेखनविधिः (श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकाण्डे) शृणुष्व विष्णुदास त्वं यतेऽहं प्रवदामि च। तुष्ट्यर्थं रामचन्द्रस्य नित्यं पत्रे तु मानवैः। लेखनीयं रामनाम शतानि नव प्रत्यहम्। अथवाष्टोत्तरशतं पूजनीयं सविस्तरम्।। २।। एवं कोटिमितं लेख्यं लक्षं वास्तु ततः परम्। हवनं हि दशांशेन कर्तव्यं विधिपूर्वकम्।। ३।। इदं विष्णुरिति ऋचा तिलाज्यैः पायसेन वा। नवात्रेनाऽथ वा कार्यं राघवं परिपूज्य च।। ४।। युधिष्ठिरस्तु तच्छ्रुत्वा करिष्यति यथाविधि। मासत्रयेण तस्यैव राज्यप्राप्तिर्भविष्यति।। ५।। अन्ते च परमं स्थानं गमिष्यति मनोर्बलात्। इति रामनामलेखनविधिः।

रामनाम लेखन विधि : श्रीमदानन्द रामायण के मनोहर काण्ड में कहा गया है कि : हे विष्णुदास! मैं तुम्हें जो बता रहा हूं उसे सुनो। रामचन्द्र की प्रीति की इच्छा रखनेवाले मनुष्यों को चाहिये कि कागज पर प्रतिदिन नौ सौ या एक सौ आठ बार रामनाम लिख कर विस्तारपूर्वक उनका पूजन करे। इस प्रकार एक करोड़ अथवा एक लाख नाम लिखने के बाद उसका दशांश हवन करना चाहिये। 'इदं विष्णुः' इस मन्त्र से घी तथा तिल अथवा

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

खीर से या नवीन अन्न से राम की पूजा करके होम करना चाहिये। (श्रीरामदास कहते हैं कि श्रीकृष्णजी द्वारा बताई हुई) इस विधि को सुनकर युधिष्ठिर यदि यथाविधि पूजन करेंगे तो तीन मास में अपना राज्य फिर से प्राप्त कर लेंगे और अन्त में इसी मन्त्र के बल से परमधाम को प्रस्थान करेंगे। इति रामनाम लेखन विधि।